P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में आत्मसम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन

अतुल कुमार मिश्र
शोध छात्र,
लो0 शि0 एवं जनसंचार विभाग,
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, सतना (म0प्र0), भारत

नन्द लाल मिश्र
उपाचार्य,
ग्रा0 वि0 एवं व्या0 प्रबन्धन विभाग,
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, सतना (म0प्र0), भारत

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में न्यायदर्श के रूप में 100 सामान्य एवं 100 अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय ज्ञात करने हेतु डॉ0 राजकुमार सारस्वत द्वारा निर्मित प्रमापीकृत उपकरण आत्मसम्प्रत्यय प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है तथा प्राप्तांकों का विश्लेषण क्रान्तिक अनुपात की मदद से किया गया है। अध्ययन के अनुसार सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में आत्मसम्प्रत्यय का स्तर निम्न है।

मुख्य शब्द : सामान्य जाति, अनुसूचित जनजाति एवं आत्मसम्प्रत्यय।

प्रस्तावना

मानव जीवन के विभिन्न उद्देश्यों को प्राप्त करने में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य किसी भी निष्पत्ति को प्राप्त नहीं कर सकता है। अतः शिक्षा ही वह संस्कार है जो व्यक्ति को सुयोग्य बनाती है। शैक्षिक प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका के विषय में कहा जाता है कि अध्यापक राष्ट्र का भाग्य विधाता होता है, जो प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सत्य प्रतीत होता है क्योंकि शिक्षा का आधार ही अध्यापक है।

अध्यापक को समाज में महत्वपूर्ण स्थान बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि वह अपना कार्य सफल एवं उचित ढंग से सम्पादित करे। शिक्षा के द्वारा ही हम बच्चों को क्या है ? क्या होना चाहिए ? व कैसे किया जाये ? इन प्रश्नों का उत्तर खोजना सिखाते है। जिसके द्वारा वह स्वयं को जानने योग्य हो जाते हैं और उन्हें आत्मसम्प्रत्यय जागृत होता है। शिक्षा बालक– बालिकाओं में सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित व्यक्तित्व का निर्माण करती है। व्यक्तित्व का मनोविज्ञान आत्मसम्प्रत्यय पर आधारित होता है। आत्मसम्प्रत्यय हमारी चेतना और संगठन में निर्णायक भूमिका में होती है। शिक्षा के द्वारा ही बालक–बालिकाओं में आत्मसम्प्रत्यय होता है। जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है।

प्रत्येक व्यक्ति का आत्मसम्प्रत्यय उसके विचारों एवं अभिवृत्तियों पर आधारित होता है। आत्मसम्प्रत्यय अन्तःकरण का संसार होता है। इसका मूल्यांकन दूसरे के साथ व्यवहार पर निर्भर करता है। CERPA ने मई 2007 में एक सुझाव दिया कि अनुसूचित जनजाति के बालक–बालिकाओं को प्रारम्भिक एवं प्राथमिक स्तर तथा माध्यमिक स्तर पर विशेष अध्ययन की सुविधाओं की व्यवस्था होनी चाहिए। जिससे अनुसूचित जनजाति के बालक–बालिकाओं में हीनता की भावना पैदा न हो तथा उन्हें अध्ययन के प्रति जागरूक होने की सुविधायें प्रदान की जानी चाहिए। इस प्रकार अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य जाति के छात्र–छात्राओं को अध्ययन के समान अवसर उपलब्ध होने चाहिए।

भूमण्डलीकरण के दौर में समाज का निर्माण करने के लिए अनुशासित, चरित्रवान, साहसी, निष्ठावान एवं उत्साही नवयुवकों की आवश्यकता है। जिसके निर्माण का दायित्व अध्यापक व अध्यापन संस्थाओं पर है। इन संस्थाओं द्वारा समान विकास के लिए शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराना चाहिए क्योंकि शिक्षा समाज में सतत् चलने वाली सौद्देशीय प्रक्रिया है। जिसके द्वारा मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास उसके ज्ञान व कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। इस प्रकार उसे सभ्य, सुयोग्य एवं सुसंस्कृत नागरिक बनाया जाता है जिससे व्यक्ति और समाज दोनों का निरन्तर विकास होता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

टीनएजर्स छात्र–छात्राएं समाज में अतिशीघ्र सर्वप्रिय होना चाहते हैं। इस कारण वे अपने को समाज के अनुरूप ढालना चाहते हैं। वे रूचियों एवं अभिक्षमताओं को अपनी आयु मण्डली के अनुसार बनाना चाहते हैं। वे जीवन के लक्ष्यों को निर्धारित करते हैं। इस प्रकार टीनएजर्स के दूरगामी लक्ष्य उसके आत्मसम्प्रत्यय में एक आयाम जोड़ देते हैं। इस अवस्था में उनका आत्मसम्प्रत्यय एक परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है। आत्मसम्प्रत्यय छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए एक महत्वपूर्ण तथ्य है। जबकि आत्मसम्प्रत्यय प्रकृति प्राप्त होने वाला गुण नहीं है अपितु यह अर्जित है। अतः मेरी दृष्टि से सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के आत्मसम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन हेतु हाईस्कूल उत्तीर्ण छात्र–छात्राएं अपेक्षाकृत अधिक उपयुक्त है।

आत्मसम्प्रत्यय का शैक्षिक बिन्दु से अध्ययन महत्वपूर्ण है। आत्मसम्प्रत्यय का अध्ययन व्यक्ति के वैयक्तिक सम्बन्धों और समायोजन को समझने के लिए भी महत्वपूर्ण है। आत्मसम्प्रत्यय व्यक्ति के व्यवहार पर बहुत प्रकार से प्रभाव डालता है। **रोजर** ने आत्मसम्प्रत्यय के सिद्धान्त पर बल देते हुये कहा है कि ''वैयक्तिक आत्मसम्मान किसी भी क्षेत्र की उपलब्धि पर निर्भर करता है। एक बालक जिसके पास उच्च आत्मसम्प्रत्यय होता है। वह ऊँचे से ऊँची उपलब्धि प्राप्त करने की आशा करता है।''

शोध प्रश्न

सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों का आत्मसम्प्रत्यय की तुलनात्मक स्थिति क्या है?

अध्ययन के उद्देश्य

सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन भिण्ड शहर के शासकीय एवं अशासकीय कॉलेजों में अध्ययनरत सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

समिष्ट

इस अध्ययन हेतु मध्य प्रदेश राज्य के जिला भिण्ड शहर के समस्त शासकीय एवं अशासकीय कॉलेजों में अध्ययनरत् विद्यार्थी, इस अध्ययन की समिष्ट है।

प्रतिदर्श एवं प्रतिचयन विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रतिदर्श चयन दो चरणों में पूर्ण किया गया–

1. शोधकर्ता द्वारा मध्य प्रदेश के जिला भिण्ड में 112 कॉलेजों में से प्रतिदर्शन की साधारण यादृच्छीकृत प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग कर 04 शासकीय एवं 04 अशासकीय कॉलेजों का चयन किया गया।
2. तत्पश्चात चयनित 04 शासकीय एवं 04 अशासकीय कॉलेजों से सम्भावित प्रतिदर्शन की साधारण यादृच्छीकृत प्रतिदर्श चयन विधि के माध्यम से 100 सामान्य एवं 100 अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में आत्मसम्प्रत्यय ज्ञात करने हेतु शोधकर्ता द्वारा डॉ0 राजकुमार सारस्वत द्वारा निर्मित प्रमापीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

उपकरण से प्राप्त प्राप्तांको को विभिन्न तालिकाओं में व्यवस्थित कर उनका विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात की गणना कर किया गया है तथा दण्ड आरेख के द्वारा आकड़ों को प्रदर्शित किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

उपकरणों द्वारा प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण कर परिणामों की व्याख्या निम्नलिखित है–

तालिका सं0 01

सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात का मान

आत्मसम्प्रत्यय	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	.05 सार्थकता स्तर, df=198 पर निष्कर्ष
सामान्य विद्यार्थी	100	365.87	40.83	12.20	सार्थक (अस्वीकृत)
अनुसूचति जनजाति विद्यार्थी	100	291.60	45.10		

* 0.05 सार्थकता स्तर पर "CR" का सारणी मान = 1.96

परिणाम की व्याख्या

उपरोक्त परिणाम दर्शाते हैं कि सामान्य विद्यार्थियों का मध्यमान 365.87 तथा अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों का मध्यमान 291.60 है जो यह दर्शाता है कि सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों में विशेष अन्तर है। दोनों ही श्रेणी के विद्यार्थी आत्मसम्प्रत्यय की दृष्टि से असमान है। सामान्य विद्यार्थियों का मानक विचलन 40.83 एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों का मानक विचलन 45.10 आया है। जब कि क्रांतिक अनुपात की गणना करने से यह 12.20 प्राप्त हुआ। यह प्राप्त मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान से अधिक है। यह प्राप्त मान 0.05 सार्थकता के स्तर पर सार्थक है। इस प्रकार से उपर्युक्त परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

परिणाम का विवेचना

उपर्युक्त परिकल्पना में अन्तर आने का कारण यह है कि अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में समायोजन अनुशासन एवं हीनभावना विद्यमान रहती है। जिस कारण आत्म सम्प्रत्यय परिवर्तित होता रहता है। देखा गया है कि अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में देशकाल एवं परिस्थितियों के आधार पर गुणों मे परिवर्तन होते रहें है। अच्छे वातावरण का प्रभाव उनके आत्मबल पर पड़ा है। जिसके कारण उनमें आत्मसम्प्रत्यय उच्च हो पाता है और वे अपने को अन्य विद्यार्थियों से अलग समझ बैठते है। इस कारण सामान्य तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

ग्राफ संख्या 01

सामान्य तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय के मापन का ग्राफीय प्रदर्शन

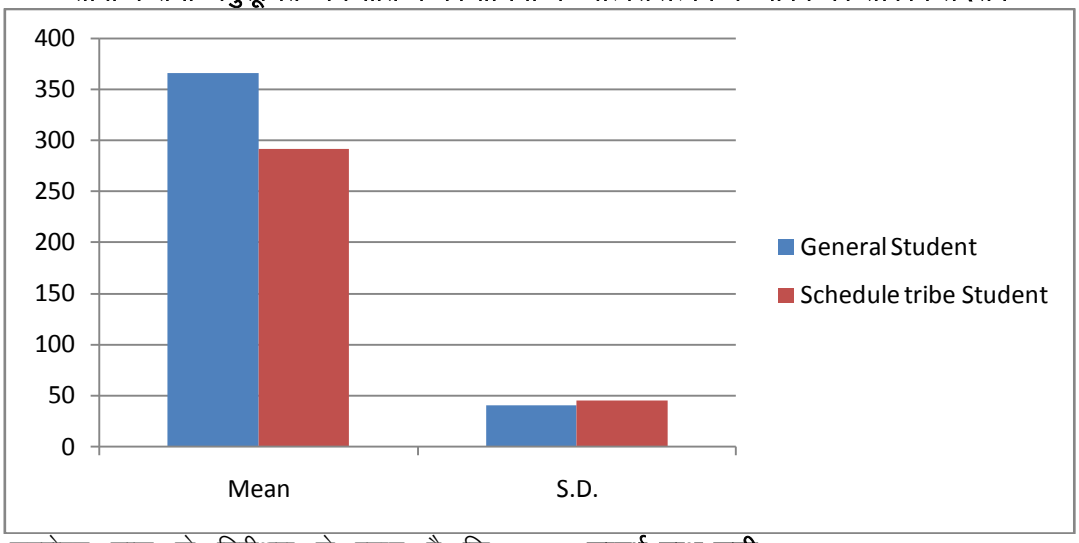

उपरोक्त ग्राफ के निरीक्षण से स्पष्ट है कि सामान्य तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय के परीक्षण प्राप्तांक का मध्यमान 365.87 व 291.60 तथा मानक विचलन 40.83 व 45.10 है।

निष्कर्ष

सामान्य तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय का अध्ययन करने पर पाया गया कि सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में आत्मसम्प्रत्यय निम्न स्तर का है।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षा विद्यार्थियों में सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित व्यक्तित्व का निर्माण करती है। व्यक्तित्व का मनोविज्ञान आत्मसम्प्रत्यय पर आधारित होता है। आत्मसम्प्रत्यय हमारी चेतना और संगठन में निर्णायक भूमिका में होती है। शिक्षा के द्वारा ही विद्यार्थियों में आत्मसम्प्रत्यय होता है। जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। सामान्य विद्यार्थियों का जीवन स्तर शैक्षिक एवं सामाजिक दृष्टि से सामान्यतः उच्च होता है। जिसके कारण उनका आत्मसम्प्रत्यय उच्च होता है। जबकि अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों का शैक्षिक एवं सामाजिक स्तर निम्न होता है। जिस कारण उनका आत्मसम्प्रत्यय निम्न होता है। अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के निम्न आत्मसम्प्रत्यय को उच्च करने के लिए उन्हें विशेष परामर्श तथा निर्देशन की सुविधायें प्रदान की जाएं साथ ही शिक्षा के महत्व को समझाकर उन्हें शिक्षा के प्रति प्रेरित किया जा सकता है तथा उन्हें विशेष शैक्षिक कार्यों में दक्ष कर समाज के लिये वे विशेष भूमिका निर्वाह कर सकें। जिससे समाज में उनका स्तर उच्च हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Jain, K. & Kakkar, N. (2014), Frustration among the secondary school students in relation to their emotional maturity: a study. Bhartiyam International Journal of Education & Research, 3(2), 1-10. Retrieved from http://gangainstituteofeducation.com/NewDocs/Frustration Among.pdf on 19/12/2015.

Jangira, N.K. (1986), Special Education in Britania and India, Gurgaon, Academic Press.

Parveen, D. (2014). Career preference, self esteem intelligence and socio-economic status as determinants of academic achievement at the secondary school level. Ph.D. - Education, Aligarh Muslim University, Aligarh.

Singh Gulab (1988), Teachers perception of scheduled caste students and their scholastic achievement Unpublished Ph.D. thesis, B.H.U. Varanasi.

V. kawat (1986), A comparative study of the self perception of backward class and non backward class students and their socio economic status, vocational and educational aspirations, *educational achievement and school environment, in M. B. Buch Third survey of research in education, NCERT, New Delhi.*

W. J. Selmon, A comparative analysis of the self concept of incarcerated and non incarcerated individuals completing the general educational development examination. Dissertation Abstracts International.